JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजेश्वर वशिष्ठ और उनकी कविता

डॉ0 सरोज गुप्ता

पं. दीनदयाल उपाध्याय शास.

कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सागर (म0प्र0)

जागेन्द्र कुमार कुशवाहा

महाराजा छत्रसाल बुदेलखण्ड विश्वविद्यालय छतरपुर (म0प्र0)

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार, लेखक और प्रसारण विशेषज्ञ राजेश्वर वशिष्ठ जी का जन्म 30 मार्च 1958 को भिवानी हरियाणा में हुआ था। जो वर्तमान में गुरूग्राम में रहते हुये स्वतंत्र लेखन कार्य में संलग्न है। राजेश्वर वशिष्ठ जी का बचपन एकांत में बीता और उनके नानाजी ने बाल्यावस्था में ही गोद ले लिया था इसलिए उनकी प्रारंभिक शिक्षा ननिहाल में आरंभ हुई।

जब वे कक्षा–5वीं में पढ़ते थे तब नानाजी के एक मित्र ने उन्हें 'म्यूनिसिपल लाइब्रेरी' जाने की सलाह दी। बचपन में ही साहित्यिक पुस्तकें– बाबू देवकीनंदन खत्री, चन्द्रकांता, वृंदावन लाल वर्मा, मृगनयनी, झॉसी की रानी आदि काव्य ग्रंथो का अध्ययन कर लिया था।

सन् 1974 में जब मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की तब वे महाकवि निराला व दिनकर जी की रचनाओं से ओत–प्रोत हुये और धीरे–धीरे मन मस्तिष्क में कविताओं की तरंगे उथल–पुथल कर छंदबद्ध रूप में आकार ले रही थी।

बैश्य कॉलेज से B.A. की पढ़ाई करते समय वहां के लाइब्रेरियन मुझ पर मेहरबान थे जिनकी मदद से बहुत सारा हिन्दी साहित्य पढ़ लिया था। इन्हीं परिस्थितियों से कवि, लेखक के भाव जाग्रत हुये।

कविता– कविता रचनाकार के अंतर्मन में संचित संयोजित प्रतिक्रियाओं की सुचिंतित भाषिक प्रस्तुति है अपने अंतर्निहित तत्वों के साथ वह कभी–कभी बहुत स्पष्ट होती है तो कभी यौगिक रूप में होती है पर निश्चित रूप से वह रचना के भीतर बैठे कवि से संवाद होती है।

लेकिन आज की कविता पाठक के मन और संवेदो को प्रभावित करती है उसे पढकर जब पाठक खुद से साक्षात्कार करता है तो कविता सफल हो जाती है।

काव्य–कृतिया–

काव्य–

1. सुनो वाल्मीकि (कविता संग्रह)
2. सोनागाछी की मुस्कान (कविता संग्रह)
3. प्रेम का पंचतंत्र (कविता संग्रह)
4. देवता नहीं कर सकते प्रेम (कविता संग्रह)
5. कुछ तो कहो कबीर
6. अगस्य के महानायक श्रीराम (काव्य)
7. युद्व सिर्फ सरहदों पर नहीं होते।

उपन्यास–

1. मुट्ठी भर लड़ाई
2. याज्ञसेनी
3. अवध में प्रकटे है श्रीराम
4. बाबा साहेब के बुद्व

हिन्दी साहित्य काव्य परंपरा में वेदो, पुराणों ग्रंथो का उल्लेख सदियों से चला आ रहा है इन्हीं पौराणिक ग्रंथो में कुछ विशिष्ठ रचना के प्रमुख पात्रो की पारंपरिक अभिव्यक्ति को राजेश्वर वशिष्ठ जी ने 'सुनो वाल्मीकि' कविता संग्रह के माध्यम से सत्य को उजागर करते हुये मर्यादित स्त्री की मार्मिक वेदना को वर्तमान परिदृश्य में प्रस्तुत कर प्रेरणा का संचार कर रहे है।

अपनी अभिव्यक्ति अनेक रूपो रंगो में प्रकट कर रही है पारंपरिक रूप से बंधन में बंधी हुई स्त्री, अपने जीवन के काष्ट साध्य पलो को अभिव्यक्ति करती है जो कवि के हृदय को निरंतर उद्वेलित करता है जिसे 'वाल्मीकि से अनुरोध' शीर्षक से लिया गया है–

महाकवि मुझे क्षमा करना
मैं विश्वकर्मा तो नहीं हूँ
कि उन अचर्चित पात्रो के लिए
रच दूँ एक नया नगर
पर हां एक छोटा सा बढ़ई जरूर हूँ।

राजेश्वर जी ने महाकवि वाल्मीकि जी से अनुरोध करते हुये कहते है कि हे महाकवि मुझे क्षमा करना क्योंकि मुझ में बुद्धि और विवेक नहीं है फिर भी एक चोर की तरह घुस रहा हूँ आपके इस महान ग्रंथ में और खोज रहा हूँ उन पात्रों को जिन्हें आपने रचा परंतु उन्हे इतना अवसर नही दिया कि वह अपने मन की बात आपसे कह सके।

हे महाकवि मुझे पुनः क्षमा करना क्योंकि मैं कोई विश्वकर्मा बढ़ई जरूर हूँ जो बनाना चाहता हूँ एक सुंदर सी खिड़की आपकी दीवार में जिसमें से झांक सके कुछ पौराणिक पात्र जैसे– सीता, उर्मिला, यशोधरा आदि और ले सके सुकून की सांसे और ताजी हवा।

'उर्मिला' – ये चौदह वर्ष कैसे काटे है उर्मिला ने
पूछो किसी व्रती से
पूछो किसी ऐसी स्त्री से
जिसे दण्ड मिला हो सुहाग का
जो वचनबद्ध होकर जी रही हो
किसी काल्पनिक पुरूष के लिए
सतयुग में भी यही जीवन था एक स्त्री का।

14 वर्षो से अंधेरे में डूबा है उर्मिला का जीवन कैसे बीता गर्भ ग्रह मंदिर में न वाल्मीकि बताएंगे न तुलसी, सतयुग से कलयुग तक की यात्रा में मनस्विनी सी उदास ताक रही है राम और सीता के साथ अवश्य लौट आए होंगे लक्ष्मण परंतु लक्ष्मण तो अपने भ्राताधर्म में लिप्त है तब सिसक उठती है उर्मिला, काश मैं भी सुंदरी बहन सीता की तरह किसी नदी–नाले में मिली होती तब मेरे लिए भी आता कोई देवता का धनुष मुझे भी चाहँता कोई विशिष्ट धनुर्धर पर यह कैसे होता मैं वीर्य शुल्का जो नहीं थी। इसलिए सीता के साथ विदा कर दिया मुझे भी ताकि सहचरी बनूँ सीता की, क्योंकि स्त्रिया स्नेह में भी बना दी जाती है दास, मिथिला में भी यही तय हुआ था जब स्वयंवर रचा जा रहा था।

उर्मिला की वेदना को न बाल्मीकि बताएगे, न तुलसी, कि अयोध्या के महलों में कैसी रहती है उर्मिला। दीप पर्व है आज टिमटिमाते दियों से जगमगा रही है अयोध्या और मन में गहन अंधकार है अंधेरा जो पिछले 14 वर्षों से रच बस गया था उसकी आत्मा में।

'सीता' –

सीता सुनती है इस समाचार को
और रहती है खामोश
कुछ नहीं कहती
बस निहारती है रास्ता
रावण का वध करते ही
वनवासी राम क्या बन गए है सम्राट
लंका पहुँच कर भी भेंजते है अपना दूत
नही जानना चाहते एक वर्ष कहां रही सीता
कैसी रही सीता
नयनो से बहती है अश्रुधार
जिसे समझ नहीं पाते हनुमान
कह नही पाते वाल्मीकि।

माता सीता श्रीराम के राहों को बार–बार निहारती हुई अपनी व्यथा को अभिव्यक्त करते हुए कहती है कि विजयी राम, रावण का वध करके सागर के तट पर क्यों बैठे है क्या वे स्वयं सीता को अशोक वाटिका लेने न जाकर केवल हनुमान से संदेश मात्र ही क्यों भेजते है, क्या वनवास में विचरण करने वाले राम अब सम्राट बन गये है जो अपना दूत भेजकर सांत्वना देना चाहते है।

अब तो रावण भी मर चुका है और विभीषण का भी राज्याभिषेक हो चुका है, पूरी लंका सुनसान है। परंतु विभीषण आदरपूर्वक सम्मान के साथ माता सीता का श्रृंगार करवाकर उन्हें पालकी में बैठकर राम के पड़ाव पर भेंजते है पालकी में बैठी सीता स्मरण करती है अपने पिता जनक को इसी प्रकार विदा किये थे।

किंतु कुठाराधात करते है राम, गूंजता है तीव्र स्वर राम का कहते है रोक दो पालकी सीता को पैदल चलकर आने दो समीप। अपमान और अपेक्षा के बोझ से दबी सीता जब पैदल चलती है तो भूमि में कंपन होने लगता है। वाल्मीकि के नायक तो राम थे परंतु मेरी विवशता को कोई नहीं पहचानता चाहे वह राम ही क्यो न हो, चाहे हनुमान, या फिर स्वयं रचनाकार वाल्मीकि हो। यह कैसी विडंबना है जो मुझे अग्निपरीक्षा से गुजरना पडता है, निर्दोष साबित करना पड़ता है, मै उदास हूँ स्त्री अस्मिता के लिए।

'यशोधरा' –

सूर्य फड़फड़ा रहा है सुनहरे पंख
किसी पक्षी की तरह
आज बंद हैं
यशोधरा के भवन की सभी खिडकियां।

यशोधरा अंदर ही अंदर किसी पक्षी की तरह फड़–फड़ा रही है अर्थात् घबरा रही है गोद में राहुल का शीश रखे दिन के अंधकार में शांत बैठी है यशोधरा, जाने किधर हवा की तरह भवन से दूर चले गये सिद्धार्थ तनिक भी न सोचा पुत्र राहुल को, किसी अपराधी की तरह अर्धरात्रि में चोर की भांति चले गये है, आखिर तुम भी पुरूष ही निकले क्या मै तुम्हारे सामने कभी रोई या गिड़–गिड़ाया की तुम मत जाओ, मत बनो सन्यासी, हाँ अफसोस इस बात का है कि बिना बताए सोता हुआ छोडकर चले गए। परंतु यशोधरा अपने कर्त्तव्य को न भूली बल्कि निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वाहन करने में समर्थ रही जो आज की नारी की प्रेरणा स्त्रोत है।

इसी प्रकार सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक चेतना की दृष्टि से 'सुनो वाल्मीकि' कविता संग्रह से अनेक कविताएं पाठकों को पौराणिक पात्रों की अभिव्यक्ति का दर्शन कराती है और पाठक भी रूबरू होना चाहता है जो वर्तमान परिदृश्य के साथ आज भी कही न कहीं उपयुक्त है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. 'सुनो वाल्मीकि' के यशोधरा शीर्षक
2. 'जानकी के लिए' शीर्षक
3. 'उर्मिला' के शीर्षक
4. बाल्मीकि से अनुरोध शीर्षक